चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम (2024-28)

अर्थशास्त्र विभाग

कोर्स करिकुलम

खंड – अ : परिचय				
पाठ्यक्रम : बैचलर इन आर्ट्स (सर्टिफ़िकेट / डिप्लोमा / डिग्री / आनर्स / आनर्स सह रिसर्च			**सेमेस्टर – IV**	**सत्र – 2024-2025**
1	**कोर्स कूट**	ECSC - 04		
2	**कोर्स शीर्षक**	**सूक्ष्म अर्थशास्त्र**		
3	**कोर्स प्रकार**	DSC		
4	**पूर्व अपेक्षित (यदि हो)**	आवश्यकता अनुरूप		
5	**कोर्स लर्निंग आउटकम (CLO)**	• उन्हें उपभोग एवं निवेश ढाँचे के बारे में अच्छा ज्ञान मिल जाएगा जो उन्हें अपने उपभोग और निवेश में उचित संतुलन बनाने में सहायक होगा| • विद्यार्थियों को बाजार और उसमे होने वाले परिवर्तनों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी मिलेगी| • विद्यार्थियों को वस्तुओं पर लगाए जाने वाले विभिन्न प्रशुल्क एवं अभ्यंश का ज्ञान प्राप्त होगा| • विद्यार्थियों को अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों के बारे में भी जानकारी मिलेगी|		
6	**क्रेडिट महत्व**	4 क्रेडिट	क्रेडिट = 15 घंटे का अध्ययन / प्रशिक्षण/ प्रवेक्षण	
7	**कुल अंक**	पूर्णांक - 100	उत्तीर्णांक - 40	

खंड – ब : कोर्स की विषयवस्तु		
कुल अध्यापन कालखंड (01घंटा प्रति काल खंड) – 60 कालखंड (60 घंटे)		
इकाई	**प्रसंग (विषय वस्तु)**	**कालखंड की संख्या**
I - राष्ट्रीय आय	1. राष्ट्रीय आय का अर्थ 2. राष्ट्रीय आय के भाग	**15**
	3. राष्ट्रीय आय की गणना 4. आर्थिक कल्याण एवं राष्ट्रीय आय 5. राष्ट्रीय आय लेखांकन 6. आय का चक्रीय प्रवाह	
II- रोज़गार एवं उपभोग फलन	1. रोज़गार का प्रतिष्ठित सिद्धांत 2. से का बाज़ार नियम 3. कीन्स का रोज़गार सिद्धांत 4. उपभोग फलन 5. औसत एवं सीमांत उपभोग फलन, गुणक एवं त्वरक 6. विनिवेश फलन , पूँजी की सीमांत दक्षता	**15**
III- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार	1. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की अवधारणा 2. अंतर-क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार 3. रिकार्डो का तुलनात्मक लागत सिद्धांत 4. हेक्शर-ओहलिन का सिद्धांत 5. प्रशुल्क 6. भुगतान संतुलन 7. भुगतान संतुलन में असंतुलन 8. भारत का भुगतान संतुलन	**15**
IV- मुद्रा एवं बैंकिंग	1. मुद्रा की खोज 2. मुद्रा – परिभाषा एवं कार्य 3. विकासशील अर्थव्यवस्था में मुद्रा की भूमिका 4. ग्रेशम का नियम 5. भारत में बैंकिंग का इतिहास 6. व्यापारिक बैंक के कार्य	**15**

हस्ताक्षर, सदस्य एवं संयोजक (केंद्रीय अध्ययन मंडल)-